अर्ह विद्या जैन शोध संस्थान
Arham Vidhya Jain Shodh Sansthan

(As per NEP 2020 and CBCS Ordinance14(2)

एम.ए.(प्राकृत)

M. A. (Prakrit)

AWADESH PRATAP SINGH UNIVERSITY
REWA (MP)

प्रोग्राम का नाम: एम.ए. (प्राकृत)

परिचय: यह पाठ्यक्रम प्राकृत भाषा की उन्नत स्तर की समझ प्रदान करता है। इसमें प्राकृत ग्रंथों और साहित्य का व्यापक संग्रह शामिल है, जिसमें काव्य, नाटक और गद्य साहित्य समाहित हैं। यह पाठ्यक्रम प्राकृत भाषा और साहित्य के आलोचनात्मक विश्लेषण की क्षमता को विकसित करने में भी सहायक है।साथ ही , इसमें प्राकृत शिलालेखों का अध्ययन भी शामिल है, जो इसके ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व की समझ को और गहरा करता है।

पात्रता: किसी मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय से प्राकृत भाषा एवं साहित्य या किसी भी प्रोग्राम में स्नातक डिग्री।

अवधि : 2 वर्ष (4 सेमेस्टर)।

क्रेडिट: एक क्रेडिट का अर्थ होगा 60 मिनट की 15 कक्षाओं के समतुल्य, जिसमें सिद्धांत, प्रायोगिक कार्य और ट्यूटोरियल शामिल हो सकते हैं।

माध्यम: अध्यापन और परीक्षा का माध्यम हिंदी और अंग्रेज़ी दोनों होगा ।

शिक्षण विधियाँ :

- व्याख्यान (Lectures)
- ट्यूटोरियल्स (Tutorials)
- चर्चाएँ (Discussions)
- असाइनमेंट और परियोजनाएँ (Assignments and Projects)

कार्यक्रम के शैक्षिक उद्देश्यों (Programme Educational Outcomes - PEOs):

PEO 1: छात्रों को प्राकृत भाषा, व्याकरण और साहित्य की उन्नत एवं विशेषीकृत समझ प्रदान करना, जिससे वे शास्त्रीय ग्रंथों और साहित्यि क परंपराओं का गहराई से अध्ययन और विश्लेषण कर सकें।

PEO 2: विद्यार्थियों को प्राकृत साहित्य के विविध रूपों — काव्य, नाटक, गद्य, शिलालेख आदि — की समग्र दृष्टिकोण से आलोचनात्मक व्याख्या करने की क्षमता प्रदान करना ।

PEO 3: प्राकृत भाषा और साहित्य के अध्ययन के माध्यम से विद्यार्थियों में अनुसंधान की प्रवृत्ति और कौशल का विकास करना, जिससे वे स्वतंत्र रूप से शोधकार्य कर सकें।

PEO 4: प्राकृत भाषा, शिलालेखों और पांडुलिपियों के ऐतिहासिक, दार्शनिक और सांस्कृतिक सन्दर्भों को समझने और व्याख्यायित करने की योग्यता विकसित करना।

PEO 5: छात्रों को अध्यापन, अनुवाद, पांडुलिपि संरक्षण, सांस्कृतिक अध्ययन, और अकादमिक शोध जैसे क्षेत्रों में व्यावसायिक सफलता के लिए तैयार करना ।

कार्यक्रम विशिष्ट परिणाम (Programme Specific Outcomes - PSOs):

PSO 1: प्राकृत भाषा, उसके व्याकरण और साहित्य की उन्नत एवं गहन समझ प्राप्त करना, जिससे छात्र प्राकृत साहित्यिक परंपराओं की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को समझ सकें।

PSO 2: प्राचीन प्राकृत ग्रंथों, काव्य, नाटकों, गद्य रचनाओं और शिलालेखों का भाषिक, साहित्यिक और दार्शनिक दृष्टिकोण से विश्लेषण करने की क्षमता विकसित करना ।

PSO 3: प्राकृत भाषा के विकास, व्युत्पत्ति, और उसकी उपभाषाओं जैसे अपभ्रंश आदि के अध्ययन के माध्यम से भाषाशास्त्रीय और व्युत्पत्तिशास्त्रीय समझ को सुदृढ़ करना।

PSO 4: छात्रों में स्वतंत्र शोध, पांडुलिपि पठन, शिलालेखों की व्याख्या और अनुवाद कौशल विकसित करना, जिससे वे अकादमिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों में प्रभावी योगदा न दे सकें।

PSO 5: अध्यापन, शोध, अनुवाद, प्राचीन ग्रंथों के संरक्षण एवं व्याख्या तथा सांस्कृतिक पुनरुत्थान से जुड़े कार्यक्षेत्रों में व्यावसायिक दक्षता प्राप्त करना ।

2-Year PG Programme (2-Year MA Prakrit)

Applicable to all UTDs/Colleges

COURSE TYPE						
Year	**Semester**	**Courses Level**	**Core Papers**	**Practicum Papers**	**Internship/VAC**	**Total Credits**
I	Sem-1	400	CC - 11: प्राकृत आगम साहित्य का इतिहास (6credits)	PC -11: प्राकृत के विविध व्याकरणों एवं भाषाओं का तुलनात्मक अध्ययन (4credits)	Seminar (2 credits)	22
		400	CC -12: प्राकृत साहित्य की आचार मीमांसा (6 credits)	PC -12: प्राकृत का व्यसाहित्य (4 credits)		
	Sem-2	400	CC - 21: प्राकृत कथा साहित्य (6credits)	PC - 21: प्राकृत वाङ्मय में दर्शन मीमांसा (4credits)	VAC (2 credits) (भाषा विज्ञान और प्राकृत व्याकरण)	22
		500	CC - 22: पांडुलिपि विज्ञान (6credits)	PC -22: प्राकृत साहित्य में नाट्यशास्त्र (4credits)		
NOTE: STUDENT WHO EXISTS AT THE END OF Ist YEAR SHALL BE AWARDED A POSTGRADUATE DIPLOMA.						

OPTION-1 : ONLY COURSE WORK

Applicable to all UTDs/Colleges

COURSE TYPE						
Year	**Semester**	**Courses Level**	**Core Papers**	**Practicum Papers**	**Internship/VAC**	**Total Credits**
II	Sem-3	500	CC - 31: अर्ध मागधी प्राकृत आगम कथा साहित्य (6credits)	PC - 31: अपभ्रंश आगम साहित्य का परिचय (4credits)	Internship (2 credits)	22
		500	CC - 32: शौर सेनी प्राकृत आगम साहित्य (6 credits)	PC - 32: प्राकृत साहित्य के चरित काव्य (4 credits)		
	Sem-4	500	CC - 41: प्राकृत साहित्य के महाकाव्य (6credits)	PC - 41: प्राकृत का छंद एवं अलंकार ज्ञान (4credits)	VAC (2 credits) (प्राकृत शिलालेख, पांडुलिपि विज्ञान और लिपियां)	22
		500	CC - 42: प्राकृत व्याकरण (प्राकृत प्रकाश) का सूत्रात्मक अध्ययन (6credits)	PC - 42: प्राकृत का सत्तक साहित्य (4credits)		

OPTION-2 : COURSE WORK & RESEARCH WORK

Applicable to all UTDs/Colleges

COURSE TYPE						
Year	**Semester**	**Courses Level**	**Core Papers**	**Practicum Papers**	**Internship/VAC**	**Total Credits**
II	Sem-3	500	CC - 31: अर्ध मागधी प्राकृत आगम कथा साहित्य (6credits)	PC - 31: अपभ्रंश आगम साहित्य का परिचय (4credits)	Internship (2 credits)	22
		500	CC - 32: शौर सेनी प्राकृत आगम साहित्य (6 credits)	PC - 32: प्राकृत साहित्य के चरित काव्य (4 credits)		
	Sem-4				Research thesis / Project/ Patent (22 Credits)	22

OPTION-3 : RESEARCH WORK

(Applicable to all UTDs/Colleges having research centers recognized by the University)

COURSE TYPE			
Year	**Semester**		**Total Credits**
II	Sem-3	Research thesis/ Project/ Patent (22 Credits)	22
	Sem-4	Research thesis/ Project/ Patent (22 Credits)	22

NOTE:-(1)UTDs/Colleges with Research Centers have the choice of running all the OPTIONS mentioned above.
(2)Students having 4 year Under Graduate Degree (Honours /Honours with Research) are eligible for direct lateral entry in the Semester-III of 2-Year PG Programme.

Curriculum Framework

Year 1

Semester 1

Course level	Course Name	Course type	Credits
400	CC - 11: प्राकृत आगम साहित्य का इतिहास	Core Course	05
400	CC -12: प्राकृत साहित्य की आचार मीमांसा	Core Course	05
400	PC -11: प्राकृत के विविध व्याकरणों एवं भाषाओं का तुलनात्मक अध्ययन	Practicum Paper	05
400	PC -12: प्राकृत का व्यवसाहित्य	Practicum Paper	04+01
	Internship/ Apprenticeship Or Seminar		02
	Total		22

Year 1

Semester 2

Course level	Course Name	Course type	Credits
400	CC - 21: प्राकृत कथा साहित्य	Core Course	05
500	CC - 22: पांडुलिपि विज्ञान	Core Course	05
400	PC - 21: प्राकृत वाङ्मय में दर्शन मीमांसा	Practicum Paper	05
500	PC -22: प्राकृत साहित्य में नाट्यशास्त्र	Practicum Paper	05
	VAC (भाषा विज्ञान और प्राकृत व्याकरण)		02
	Total		22

Year 2

Semester 3

Course level	Course Name	Course type	Credits
500	CC - 31: अर्ध मागधी प्राकृत आगम कथा साहित्य	Core Course	05
500	CC - 32: शौर सेनी प्राकृत आगम साहित्य	Core Course	05
500	PC - 31: अपभ्रंश आगम साहित्य का परिचय	Practicum Paper	05
500	PC - 32: प्राकृत साहित्य के चरित काव्य	Practicum Paper	5
	Internship/ Apprenticeship Or Seminar		02
	Total		22

Year 2

Semester 4

Course level	Course Name	Course type	Credits
500	CC - 41: प्राकृत साहित्य के महाकाव्य	Core Course	05
500	CC - 42: प्राकृत व्याकरण (प्राकृत प्रकाश) का सूत्रात्मक अध्ययन	Core Course	05
500	PC - 41: प्राकृत का छंद एवं अलंकार ज्ञान	Practicum Paper	05
500	PC - 42: प्राकृत का सत्तंक साहित्य	Practicum Paper	05
	VAC (प्राकृत शिलालेख, पांडुलिपि विज्ञान और लिपियां)		02
	Total		22

Semester –I
Paper- I

CC 11	प्राकृत आगम का इतिहास
ईकाई 1	प्राकृत वाङ्मय का इतिहास
ईकाई 2	अर्धमागधी एवं शौरसनी आगम साहित्य
ईकाई 3	दिगम्बर एवं श्वेताम्बर परम्परा में आगम संकलन एवं संरचना का इतिहास
ईकाई 4	आगमों के भेद–प्रभेद, अंगप्रविष्ट एवं अंगबाह्य
ईकाई 5	आचारांगसूत्र एवं षट्खण्डागम का परिचय

सन्दर्भ ग्रन्थ–

1. प्राकृत साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, डॉ. नेमिचन्द्र शास्त्री, तारावुक एजेन्सी, वाराणसी,
2. उत्तरप्रदेश, 1988
3. जैनसाहित्य का बृहद् इतिहास, पार्श्वनाथ विद्यापीठ, वाराणसी, उत्तरप्रदेश

Paper- II

CC 12	प्राकृत साहित्य की आचार मीमांसा
ईकाई 1	प्राकृत साहित्य में भगवती आराधना का महत्त्व, ग्रन्थकर्ता का परिचय, जीवन व्यवहार में आराधना की उपयोगिता, आराधना का लक्षण, आराधना के भेद–प्रभेद, आराधना का नियम, आराधना के अधिकारी
ईकाई 2	भगवती आराधना में सल्लेखना विचार, सल्लेखना मरण का स्वरूप, मरण का स्वरूप एवं भेद, पांच प्रमुख मरणों का विवेचन
ईकाई 3	28 मूलगुणों का परिचय, पंच महाव्रतों, पांच समितियों, पंचेन्द्रियविजय, 6 आवश्यक, 7 शेष गुणों का विवेचन
ईकाई 4	उत्तरगुण विवेचन– 10 दशधर्म, 22 परीषह, 12 तप, पंचाचार, 12 भावनाएँ
ईकाई 5	श्रावकों के अष्टमूलगुण, पंच अणुव्रत एवं सामाजिक उपयोगिता, सप्तव्यसन त्याग।

सन्दर्भ ग्रन्थ–

1. भगवती आराधना, आचार्य शिवार्य, सम्पादन– पं. कैलाशचन्द्र शास्त्री, जैन संस्कृति संरक्षण संघ, सोलापुर, महाराष्ट्र
2. भगवदी आराहणा, आचार्य शिवार्य, संस्कृतछाया एवं हिन्दी अनुवाद– डॉ. सतेन्द्र कुमार जैन, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली, 2018
3. मूलाचार, आचार्य वट्टकेर, सम्पादन– आर्यिका रत्न ज्ञानमती, भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली 2009
4. वसुनन्दिश्रावकाचार, आचार्य वसुनन्दि, सम्पादक– पं. हीरालाल जैन, सिद्धान्तशास्त्री, भारतीय ज्ञानपीठ, काशी, 1952
5. जैनधर्म में पंच–अणुव्रत एवं भारतीय दण्ड संहिता, डॉ. सतेन्द्र कुमार जैन, धर्मोदय साहित्य प्रकाशन, सागर, 2012

Paper- III

PC 11	प्राकृत के विविध व्याकरणों एवं भाषाओं का तुलनात्मक अध्ययन
ईकाई 1	प्राकृत वाङमय के अध्ययन की आवश्यकता, प्राकृत व्याकरण विषयक प्रमुख ग्रन्थ, प्राकृत व्याकरण की प्रकृति, संस्कृत–प्राकृत पदों का परस्पर सम्बन्ध
ईकाई 2	स्वर विधान, व्यंजन लोप विधान, लिंगविचार, संयुक्तव्यंजन विधि, असंयुक्त व्यंजन विधि, प्रत्ययविधान, धात्वादेष, अव्ययविचार, संधिविचार, कृदन्तविचार
ईकाई 3	शौरसेनी, मागधी, पैषाची, चूलिका पैशाची, प्राकृत भाषा के विशिष्ट व्याकरण नियम
ईकाई 4	अपभ्रंश व्याकरण के विशिष्ट नियम
ईकाई 5	प्राकृत व्याकरण के अध्ययन में संस्कृत व्याकरण की भूमिका, प्राकृत व्याकरण के बोध के लिये अपरिहार्यकारण एवं उसकी उपयोगिता

सन्दर्भ ग्रन्थ–

1. प्राकृत रचना भास्कर, मुनि श्री प्रणम्य सागर महाराज, आर्हत विद्या समिति, गोटेगाँव, नरसिंहपुर, मध्यप्रदेश
2. प्राकृत रचना सौरभ, प्रो. कमलचन्द्र सोगाणी, अपभ्रंश साहित्य अकादमी एवं पुस्तकालय, जयपुर, 2022
3. प्राकृत प्रकाश, वररुचि, मनोरमा व्याख्या सहित, श्री मथुरा प्रसाद दीक्षित, चौखम्बा संस्कृत संस्थान, वाराणसी, सप्तम संस्करण, वि. सं. 2057
4. वररुचि प्राकृत प्रकाश, सम्पादक– डॉ. कमलचन्द्र सोगाणी, प्रकाशक– अपभ्रंश साहित्य अकादमी, जैनविद्या संस्थान, श्री महावीर जी, राजस्थान 2010 ई.
5. सिद्धहेमशब्दानुशासन, आचार्य हेमचन्द्र सूरि, सम्पादक– डॉ. के.वी. आप्टे, सांगली, चौखम्बा संस्कृत संस्थान, 1996
6. अभिनव प्राकृत व्याकरण, डॉ. नेमिचन्द्र शास्त्री, जैनविद्यापीठ, सागर, 2017

Paper- IV

PC 12	प्राकृत काव्य साहित्य
ईकाई 1	गाहासत्तसई का परिचय, ग्रन्थकर्ता का परिचय एवं 1–50 गाथाओं का साहित्यिक एवं भाषिक अध्ययन
ईकाई 2	प्राकृत वाङ्मय के प्रमुख काव्य ग्रन्थ, गद्यपद्यकाव्य परिचय, प्राकृत काव्य का वैशिष्ट्य, प्राकृत काव्यों की लोकजीवन में उपयोगिता
ईकाई 3	तित्थयर भावणा का परिचय, ग्रन्थकर्ता का परिचय, 1–65 गाथाओं का साहित्यिक एवं भाषिक अध्ययन
ईकाई 4	तित्थयर भावणा में वर्णित 66–131 गाथाओं का साहित्यिक एवं भाषिक अध्ययन
ईकाई 5	वज्जालग्गं का परिचय, ग्रन्थकर्ता का परिचय एवं सज्जण, दुज्जण, मित्त तथा णीई वज्जा का सांस्कृतिक अध्ययन

सन्दर्भ ग्रन्थ–

1. तित्थयर–भावणा, मुनि श्री प्रणम्य सागर जी, आचार्य अकलंकदेव जैनविद्या शोधालय समिति, उज्जैन, 2021

2. गाहासत्तसई, महाकवि हाल, अनुवादक– पं. विश्वनाथ पाठक, पार्श्वनाथ शोधपीठ, वाराणसी, उत्तरप्रदेश, 1995
3. वज्जालग्गं, जयवल्लभसूरी, प्राकृत टेक्ट सोसाइटी, अहमदाबाद–9, 1969
4. प्राकृत साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, डॉ. नेमिचन्द्र शास्त्री, तारावुक एजेन्सी, वाराणसी, उत्तरप्रदेश, 1988

Paper- IV

Viva Vice

Semester –II

Paper- I

CC 21	प्राकृत कथा साहित्य
ईकाई 1	प्राकृत वाङ्मय में कथा साहित्य का स्थान, प्राकृत कथाओं की सामाजिक उपयोगिता, प्राकृत कथाओं के अध्ययन की आवश्यकता।
ईकाई 2	प्राकृत के सुप्रसिद्ध कथाग्रन्थ एवं कथाकारों का संक्षिप्त परिचय
ईकाई 3	धम्मकहा (दर्शनविशुद्धि आदि भावना) धम्मकहा ग्रन्थकार का परिचय धम्मकहा कथा का समाज पर प्रभाव धम्मकहा की नैतिक एवं पारलौकिक शिक्षाएँ
ईकाई 4	कुवलयमालाकहा ग्रन्थ के ग्रन्थकार का परिचय कुवलयमाला कहा का सार कुवलयमाला ग्रन्थ कें 1–12 अनुच्छेदों का अध्ययन कुवलयमाला का सांस्कृतिक अध्ययन
ईकाई 5	णाणपंचमी कहा कथाकार का परिचय णाणपंचमी कहा का परिचय णाणपंचमी कहा की सामाजिक उपयोगिता णाणपंचमी कहा की नैतिक अवधारणा

सन्दर्भ ग्रन्थ–

1. प्राकृत साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, डॉ. नेमिचन्द्र शास्त्री, तारावुक एजेन्सी, वाराणसी, उत्तरप्रदेश, 1988
2. धम्मकहा, मुनिश्री प्रणम्य सागर जी, आर्हत विद्या समिति, गोटेगाँव, नरसिंहपुर, मध्यप्रदेश
3. कुवलयमाला कहा, उद्योतनसूरि, सम्पादक– प्रो. प्रेमसुमन जैन, प्राकृत भारती अकादमी, जयपुर, राजस्थान, 2015
4. णाणपंचमी कहा, महेश्वरसूरि, सिंघी जैन शास्त्र शिक्षापीठ, भारतीय विद्याभवन, बम्बई, महाराष्ट्र, 1949
5. कुवलयमाला का सांस्कृतिक अध्ययन, प्रो. प्रेमसुमन जैन, प्राकृत भारती अकादमी, जयपुर, राजस्थान
6. प्राकृत साहित्य का इतिहास, डॉ. जगदीशचन्द्र जैन, चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी, उत्तरप्रदेश, 1985

Paper- I

CC 22	पाण्डुलिपि विज्ञान
ईकाई 1	पाण्डुलिपिविज्ञान का परिचय– पाण्डुलिपि का स्वरूप, प्रकार, विशेषता (ताडपत्र, भुर्जपत्र, सांचीपत्र, ताम्रपत्र, पाषाणलेख, कागजपत्र, चर्मपत्र, धातुपत्र), पाण्डुलिपि लेखन की पद्धति, लेखक की विशेषता, लेखन सामग्री।
ईकाई 2	पाण्डुलिपि का काल निर्धारण पद्धति, देशविदेशों में स्थित पाण्डुलिपि भाण्डारागारों का सामान्य परिचय।
ईकाई 3	पाण्डुलिपि सम्पादन विधि, पाण्डुलिपि सम्पादन के अंग।
ईकाई 4	पाण्डुलिपियों के आलोचनात्मक अध्ययन की पद्धति, पाठदोष, पाण्डुलिपि पाठ संशोधन की विधि, पृष्ठाकंन, विरामचिह्न, संकेताक्षर, पुष्पिका, ग्रन्थ सम्पादन में उपयोगी पारिभाषिक शब्द।
ईकाई 5	पाण्डुलिपि सम्पादन की समस्याएँ एवं समाधान

सन्दर्भ ग्रन्थ–

1. पाण्डुलिपि विज्ञान, डॉ. सत्येन्द्र, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, राजस्थान।
2. शोधप्रविधि एवं पाण्डुलिपिज्ञानम्, प्रो. अभिराज राजेन्द्र मिश्र, अक्षयवट प्रकाशन प्रयागराज, उत्तरप्रदेश।
3. Introduction of manuscriptology] R.S Shivaganesh Murthy. Sharda Publishing House, Delhi

Paper- III

PC 21	प्राकृत वाङ्मय में दर्शनमीमांसा
ईकाई 1	प्रमुख जैनदार्शनिक सिद्धान्त और उनकी सामाजिक उपयोगिता, भारतीय दर्शनों में जैनदर्शन की विशेषता।
ईकाई 2	द्रव्य का स्वरूप, द्रव्य के भेद और उनका विवेचन, नवपदार्थ का स्वरूप एवं विवेचन
ईकाई 3	षोडशकारण भावनाओं का दार्शनिक चिन्तन
ईकाई 4	चौदह गुणस्थानों का सामान्य परिचय
ईकाई 5	चौदह मार्गणाओं का सामान्य परिचय

सन्दर्भ ग्रन्थ–

1. प्रवचनसार (ज्ञेयतत्त्वाधिकार), आचार्य कुन्दकुन्द, परमश्रुत प्रभावक मण्डल, श्रीमद् राजचन्द्र आश्रम, अगास, आणंद, गुजरात, 1999
2. तित्थयर–भावणा, मुनि श्री प्रणम्य सागर जी, आचार्य अकलंकदेव जैनविद्या शोधालय समिति, उज्जैन, 2021
3. जैनदर्शन, पं. महेन्द्रकुमार न्यायाचार्य, श्री गणेशवर्णी शोधसंस्थान, नरिया, वाराणसी, उत्तरप्रदेश।

Paper- IV

PC 22	प्राकृत साहित्य में नाट्यशास्त्र
ईकाई 1	प्राकृत वाङ्मय में नाट्यशास्त्र का मूलाधार, भरतमुनि के नाट्यशास्त्र में प्राकृत के तत्त्व, नाट्यशास्त्र में लोकभाषा और उनका प्राकृत प्रयोग।
ईकाई 2	नाट्यशास्त्र में प्राकृतभाषा का विधान, नाट्यशास्त्र में प्राकृत का लक्षण, भाषा के भेद, प्राकृत नाटकों में पात्रयोजना, लोकभाषाओं का योगदान।
ईकाई 3	नाट्यशास्त्र के 17 वे अध्याय का पाठाभ्यास (श्लोक 1–58)
ईकाई 4	नाट्यशास्त्र में छन्द विधान (तन्वी, विद्युद्भ्रान्ता, कमलमुखी, घनपंक्ति, शालिनी, विजया, नलिनी, कामिनी, पंक्ति)
ईकाई 5	नाट्यशास्त्र में छन्द विधान (रजनी, मिताक्षरा, हंसास्य, मत्तचेष्टिता, ध्वजिनी, केतुमती, द्रुतपादगति, गतविशोका)

सन्दर्भ ग्रन्थ–

1. नाट्यशास्त्र, भरतमुनिप्रणीत, सम्पादक– पंडित केदारनाथ, प्रकाशक– भारतीय विद्या प्रकाशन, वाराणसी, उत्तरप्रदेश, 1998
2. नाट्यशास्त्र (प्रथम काव्यलक्षण खण्ड), अध्याय–17, सम्पादक– आचार्य रेवाप्रसाद द्विवेदी, प्रकाशक– भारतीय उच्च अध्ययन–संस्थान, शिमला, हिमाचलप्रदेश–2005
3. नाट्यशास्त्र में प्राकृत सन्दर्भ, डॉ. सुदर्शन मिश्र, प्राकृत अध्ययन–शोध–केन्द्र, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, जयपुर परिसर, जयपुर राजस्थान, 2013

Paper- V
Viva Vice

Semester –III

Paper- I

CC 31	अर्धमागधी आगम कथा साहित्य
ईकाई 1	अर्धमागधी आगम कथा साहित्य का परिचय
ईकाई 2	ज्ञाताधर्मकथा का परिचय एवं कथा के मूल तत्त्व
ईकाई 3	उदकज्ञात अध्ययन का पाठाभ्यास
ईकाई 4	उत्तराध्ययनसूत्र के नमिप्रव्रज्या संवाद कथा का अध्ययन
ईकाई 5	उपासकाध्ययन सूत्र के प्रथम अध्ययन आनन्द कथा का अभ्यास

सन्दर्भ ग्रन्थ–

1. प्राकृत साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, डॉ. नेमिचन्द्र शास्त्री, ताराबुक एजेन्सी, वाराणसी, उत्तरप्रदेश, 1988
2. ज्ञाताधर्मकथांगसूत्र, सम्पादक– युवाचार्य श्रीमधुकर मुनि, आगम प्रकाशन समिति, श्रीब्रज मधुकर स्मृति भवन, पीपलिया, बाजार, ब्यावर, राजस्थान
3. उत्तराध्ययनसूत्र, वाचना प्रमुख– आचार्य तुलसी, सम्पादक– आचार्य महाप्रज्ञ, प्रकाशक– जैनविश्वभारती संस्थान, लाडनूँ, राजस्थान
4. उपासकाध्ययनसूत्र, सम्पादक– युवाचार्य श्रीमधुकर मुनि, आगम प्रकाशन समिति, श्रीब्रज मधुकर स्मृति भवन, पीपलिया, बाजार, ब्यावर, राजस्थान

Paper- II

CC 32	शौरसेनी प्राकृत आगम साहित्य
ईकाई 1	शैरसेनी प्राकृत का क्षेत्र, शौरसेनी प्राकृत में लोकभाषाओं का प्रभाव, शौरसेनी प्राकृत के मूलतत्त्व, शौरसेनी प्राकृत में भाषा वैज्ञानिक तत्त्व।
ईकाई 2	शौरसेनी प्राकृत साहित्य, छक्खंडागमसूत्र का परिचय, कसायपाहुडसूत्र का परिचय
ईकाई 3	शौरसेनी प्राकृत का टीका साहित्य– वीरेसनाचार्य कृत धवला, जयधवला टीका एवं महाधवल टीका का परिचय, अष्टपाहुड की नन्दिनी टीका का परिचय। बारसाणुवेक्खा की कादम्बरी टीका का परिचय
ईकाई 4	आचार्य कुन्दकुन्दकृत शौरसेनी साहित्य का संक्षिप्त परिचय
ईकाई 5	आचार्य यतिवृषभ एवं तिलोयपण्णत्ति का परिचय

सन्दर्भ ग्रन्थ–

1. प्राकृत साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, डॉ. नेमिचन्द्र शास्त्री, तारावुक एजेन्सी, वाराणसी, उत्तरप्रदेश, 1988
2. षट्खण्डागम परिशीलन (प्रस्तावना), पं. बालचन्द्र शास्त्री, भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली, 2011
3. षट्खण्डागम की शास्त्रीय भूमिका, प्रो. धर्मचन्द्र जैन, जबलपुर, मध्यप्रदेश।
4. कसायपाहुडसुत्तं, आचार्य गुणधर विरचित, सम्पादक– डॉ. धर्मेन्द्र कुमार जैन, प्राकृत अध्ययन–शोध–केन्द्र, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, जयपुर परिसर, जयपुर राजस्थान, 2013
5. अट्ठपाहुडं, नन्दिनीटीका, आचार्य कुन्दकुन्द, टीकाकार'– मुनिश्री प्रणम्य सागर, आचार्य अकलंकदेव जैनविद्या शोधालय समिति, उज्जैन, 2022
6. बारसाणुवेक्खा, कादम्बिनी टीका, आचार्य कुन्दकुन्द, टीकाकार'– मुनिश्री प्रणम्य सागर, आचार्य अकलंकदेव जैनविद्या शोधालय समिति, उज्जैन, 2022
7. तिलोयपण्णत्ति, आचार्य यतिवृषभ, सम्पादक– डॉ. ए.एन. उपाध्ये एवं डॉ. हीरालाल जैन, जैन संस्कृति संरक्षण संघ, सोलापुर, महाराष्ट्र, 1943

Paper- III

PC31	अपभ्रंश साहित्य का परिचय
ईकाई 1	अपभ्रंशसाहित्य का स्वरूप एवं परिधि, अपभ्रंश का अर्थ, भाषावैज्ञानिक तत्त्व एवं विस्तारक्षेत्र।
ईकाई 2	अपभ्रंशव्याकरण के प्रमुख नियम, अपभ्रंश का व्याकरणसाहित्य सिद्धहेमशब्दानुशासन के आठवें अध्याय के चतुर्थ पाद के सूत्र 329 से 446 तक का पाठाभ्यास
ईकाई 3	कहकोसु ग्रन्थ का परिचय, दसवीं संधि के कडवक 1–16, संघश्री कथानक का पाठाभ्यास
ईकाई 4	आचार्य योगीन्दुदेव का कृतित्व एवं व्यक्तित्व
ईकाई 5	शोधप्रविधि पर आधारित योगीन्दुविरचित योगसार का परिचय

सन्दर्भ ग्रन्थ–

1. प्राकृत साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, डॉ. नेमिचन्द्र शास्त्री, तारावुक एजेन्सी, वाराणसी, उत्तरप्रदेश, 1988
2. वररुचि प्राकृतप्रकाश, सम्पादक– डॉ. कमलचन्द्र सोगाणी, प्रकाशक– अपभ्रंश साहित्य अकादमी, जैनविद्या संस्थान, श्री महावीरजी, राजस्थान 2010 ई.
3. सिद्धहेमशब्दानुशासनम्, हेमचन्द्राचार्यविरचित, सम्पादक– प्यारचन्द्र मा.सा. (प्रियोदया हिन्दीव्याख्या टीका), प्रकाशक– आगम, अहिंसा–संहिता एवं प्राकृत संस्थान, उदयपुर, राजस्थान
4. कहकोसु (मूल), मुनिश्रीचन्द्र, सम्पादक– डॉ. हीरालाल जैन, प्राकृत टेक्स्ट सोसायटी, अहमदाबाद, गुजरात, 1969
5. कहकोसु (हिन्दी अनुवाद), मुनिश्रीचन्द्र विरचित, सम्पादन एवं हिन्दी अनुवाद– डॉ. दर्शना जैन, धर्मोदय साहित्य प्रकाशन, सागर, मध्यप्रदेश, 2017
6. योगसारो, आचार्य योगीन्दुदेव कृत, सम्पादक– ए. एन. उपाध्ये, श्री परमश्रुत प्रभावक मण्डल, श्रीमद् राजचन्द्र आश्रम, अगास, आणंद, गुजरात, 2000
7. अपभ्रंश एक परिचय, डॉ. कमलचन्द्र सोगाणी, अपभ्रंश साहित्य अकादमी, जैनविद्या संस्थान, श्री महावीरजी, राजस्थान, 2000

Paper- IV

PC 32	प्राकृत साहित्य के चरित काव्य
ईकाई 1	प्राकृत साहित्य में चरित का विकास, चरित काव्यो का स्वरूप, चरित काव्य की सामाजिक उपयोगिता
ईकाई 2	प्राकृत के प्रमुख चरित काव्यों एवं काव्यकारों का परिचय
ईकाई 3	पउमचरियं की कथावस्तु, समीक्षा
ईकाई 4	पउमचरियं के इंदनिव्वाणगमणाहियारो सर्ग का पाठाभ्यास
ईकाई 5	पउमचरियं के बालिनिव्वाणगमणाहियारो सर्ग का पाठाभ्यास

सन्दर्भ ग्रन्थ–

1. प्राकृत साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, डॉ. नेमिचन्द्र शास्त्री, तारावुक एजेन्सी, वाराणसी, उत्तरप्रदेश, 1988
2. पउमचरियं, विमलसूरि, हिन्दी अनुवाद शान्तिलाल म. बोरा, प्रकाशक– प्राकृत ग्रन्थ परिषद्, अहमदाबाद, 2005

Paper- V
Viva Vice

Semester –IV
Paper- I

CC 41	प्राकृत साहित्य के महाकाव्य
ईकाई 1	प्राकृत के शास्त्रीय महाकाव्यों का स्वरूप, महाकाव्यों की सामाजिक एवं नैतिक उपयोगिता
ईकाई 2	प्राकृत के प्रमुख महाकाव्यों एवं काव्यकारों का परिचय
ईकाई 3	सेउबंधो का कथावस्तु, समीक्षा एवं ग्रन्थकार परिचय
ईकाई 4	सेउबंधों प्रथम सर्ग का पाठाभ्यास
ईकाई 5	गउडवहो की कथावस्तु एवं प्रथम कुलक का पाठाभ्यास

सन्दर्भ ग्रन्थ–

1. प्राकृत साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, डॉ. नेमिचन्द्र शास्त्री, ताराबुक एजेन्सी, वाराणसी, उत्तरप्रदेश, 1988
2. सेउबंधो, महाकवि प्रवरसेन, हिन्दी व्याख्या– पं. रामनाथ त्रिपाठी, शास्त्री, कृष्णदास अकादमी वाराणसी, उत्तरप्रदेश 2002

Paper- II

CC42	प्राकृत व्याकरण (प्राकृत प्रकाश) का सूत्रात्मक अध्ययन
ईकाई 1	प्राकृत प्रकाश ग्रन्थ के रचनाकार का परिचय एवं प्राकृत प्रकाश का वैशिष्ट्य
ईकाई 2	प्राकृत प्रकाश का प्रथम पाद का अभ्यास
ईकाई 3	प्राकृत प्रकाश का द्वितीय पाद का अभ्यास
ईकाई 4	प्राकृत प्रकाश का तृतीय पाद का अभ्यास
ईकाई 5	प्राकृत प्रकाश का चतुर्थ पाद का अभ्यास

सन्दर्भ ग्रन्थ–

1. प्राकृत प्रकाश, वररुचि, मनोरमाव्याख्यासहित, श्रीमथुराप्रसाददीक्षित, चौखम्बा संस्कृत संस्थान, वाराणसी, सप्तम संस्करण, वि. सं. 2057
2. वररुचि प्राकृतप्रकाश, सम्पादक– डॉ. कमलचन्द्र सोगाणी, प्रकाशक– अपभ्रंश साहित्य अकादमी, जैनविद्या संस्थान, श्री महावीरजी, राजस्थान 2010 ई.
3. प्राकृतप्रकाश, वररुचि, सम्पादक– श्रीसत्यरंजन वन्द्योपाध्याय, प्रकाशक– संस्कृत पुस्तक भंडार, कौलकाता, 1975 ई

Paper- III

PC 41	प्राकृत का छन्द एवं अलंकार ज्ञान
ईकाई 1	प्राकृत साहित्य में छन्दों एवं अलंकारों की परम्परा, समाज में छन्दों एवं अलंकारों का प्रभाव, छन्द का स्वरूप एवं भेद–प्रभेद।
ईकाई 2	प्राकृत के प्रमुख छन्दशास्त्र एवं अलंकार शास्त्र एवं उनके रचनाकार
ईकाई 3	प्राकृत के प्रमुख वर्णिक छन्दों का परिचय (इंदवज्जा, उविंदवज्जा, भुअंगपआत, तोटक, सद्धरा, वसंततिलआ, मालिणी, पुहवी, सादूलविक्कीडिअ)
ईकाई 4	प्राकृत के प्रमुख मात्रिक छन्दों का परिचय (गाहा, विगाहा, उग्गाहा, गाहिणी, दोहा, रोला, छप्पय, खंधआ, चोपइया, घत्ता)
ईकाई 5	अलंकारदप्पण का परिचय, अलंकार का स्वरूप, भेद एवं प्रमुख अलंकारों का परिचय (प्रतिवस्तूपमा,द्विगुणोपमा, मालोपमा, श्लेषोपमा)

सन्दर्भ ग्रन्थ–

1. प्राकृत पैंगलम्, कवि पिंगल, सम्पादक– डॉ. भोलाशंकर व्यास, प्रकाशक– प्राकृत ग्रन्थ परिषद, अहमदाबाद, 2007
2. वृत्तजातिसमुच्चय, कवि विरहांक, सम्पादक– प्रो. एच.डी. वेलणकर, प्रकाशक– राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर, राजस्थान 1962

3. प्राकृत साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, डॉ. नेमिचन्द्र शास्त्री, ताराबुक एजेन्सी, वाराणसी, उत्तरप्रदेश, 1988
4. अलंकारदप्पण, अज्ञातकवि, अनुवादक–भँवरलाल नाहटा, प्रकाशक– पार्श्वनाथ विद्यापीठ, वाराणसी, 2001

Paper- IV

PC 42	प्राकृत का सट्टक साहित्य
ईकाई 1	सट्टक की उत्पत्ति एवं विकास, सट्टक का स्वरूप एवं विशेषता, नाटकों में सट्टकों की परम्परा
ईकाई 2	प्राकृत के प्रमुख सट्टक एवं उनके रचनाकार (चंदलेहा, आनंदसुंदरी, रंभामंजरी, श्रृंगारमंजरी आदि)
ईकाई 3	कप्पूरमंजरी की प्रथम जवनिका का पाठाभ्यास
ईकाई 4	कप्पूरमंजरी की द्वितीय जवनिका का पाठाभ्यास
ईकाई 5	कप्पूरमंजरी की तृतीय एवं चतुर्थ जवनिका का पाठाभ्यास

सन्दर्भ ग्रन्थ–

1. प्राकृत साहित्य का आलोचनात्मक इंतिहास, डॉ. नेमिचन्द्र शास्त्री, ताराबुक एजेन्सी, वाराणसी, उत्तरप्रदेश, 1988
2. कप्पूरमंजरी, राजशेखर, टीकाकार, वासुदेव, निर्णयसागर, मुद्रणालयम्, बम्बई, 1949

Paper- V
Viva Vice

Paper- VI
Project Report and Practical